बच्चों को प्रेरित करते कॉमिक्स

ऋचा वर्मा

मार्टिन लूथर किंग, जू., बेंजामिन फ्रैंकलिन और अमेरिका के गृहयुद्ध की कहानियां अब और सरलता तथा मजे से पढ़ी जा सकेंगी क्योंकि भारतीय-अमेरिकी **रुचिर शाह** ने इन विभूतियों और घटनाओं पर कॉमिक पुस्तकों की एक श्रृंखला तैयार की है।

पौराणिक कथाओं के मानव पक्षी गरुड़ की याद है जिसने हजारों दुष्ट सर्पों को अच्छा सबक सिखाया था? और राक्षसराज रावण का भाई कुम्भकर्ण जो सदा ढेर सारे गरमागरम और भाप निकलते भोजन से घिरा नज़र आता था?

अविस्मरणीय भारतीय चरित्रों पर आधारित अमर चित्रकथा सीरीज़ कॉमिक्स से प्रेरणा लेते हुए भारतीय-अमेरिकी छात्र रुचिर शाह ने 8 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के पाठकों के लिए अमेरिकी नायकों के जीवनचरित्र तैयार किए हैं।

जून में व्हाइट हाउस में आयोजित एक समारोह में यू.एस. प्रेजिडेंशियल स्कॉलर घोषित किए गए रुचिर ह्यूस्टन, टेक्सस स्थित राइस यूनिवर्सिटी में चीनी भाषा, भौतिकी और इतिहास के पहले वर्ष के छात्र हैं। वर्ष 1964 में राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन के कार्यकारी आदेश से स्थापित यह सम्मान अमेरिका में हाईस्कूल के छात्रों को पढ़ाई और कला में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए मिलने वाले सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मानों में से एक है।

सत्रह वर्षीय रुचिर शाह बताते हैं, ''मेरी रुचि हमेशा से ही इतिहास और संसारभर की संस्कृतियों के बारे में जानने में रही है। बचपन में मैं अमर चित्रकथा कॉमिक्स पढ़ता था। दो बरस पहले मैंने अमर चित्रकथा कॉमिक्स का प्रकाशन करने वाली कम्पनी इंडिया बुक हाउस में इंटर्नशिप की। मेरे मन में विचार आया कि अमेरिकी छात्रों के लिए भी इसी तरह सामग्री तैयार की जाए जो अक्सर इतिहास को बहुत उबाऊ मानते हैं।''

वर्ष 2006 की गर्मियों में पांच हफ़्ते की इंटर्नशिप के दौरान रुचिर ने कॉमिक बुक्स के सृजन का अनुभव पाया। वह याद करते हैं, ''मैंने लिखने, चित्रांकन करने, सामग्री का प्रारूप तैयार करने से लेकर छपाई और बिक्री तक- प्रकाशन की पूरी प्रक्रिया का अनुभव पाया। इसी को आधार बनाकर मैंने अपने व्यवसाय की नींव रखी।''

रुचिर की मां कम्प्यूटर प्रोग्रामर विभा शाह बेटे की इस क्षेत्र में रुचि के कारण उसके बचपन से ही किताबों से लगाव को मानती हैं, ''हम हर हफ़्ते लाइब्रेरी से किताबों से लदेफदे आते। हाईस्कूल के आखिरी बरस में तो हमें किताबें उससे छिपाकर रखनी पड़ीं ताकि वह पूरा ध्यान पढ़ाई पर दे सके।''

रुचिर के ब्रांड ई जेड कॉमिक्स ने अब तक तीन कॉमिक्स प्रकाशित किए हैं: मार्टिन लूथर किंग जूनियर, बेंजामिन फ्रैंकलिन और अमेरिकी गृहयुद्ध। वह बताते हैं कि उन्होंने अमेरिकाभर में पुस्तकालयों, बुक स्टोरों, स्कूलों और संग्रहालयों में इनकी 750 से अधिक प्रतियां रखी हैं।

रुचिर को मुंबई से 1985 और 1990 में अमेरिका आए अपने माता-पिता से काफी सहायता मिलती है। मुंबई में रह रहे उसके दादाजी स्थानीय कलाकारों और छापाखानों से समन्वय करके उसके काम में बहुत मदद करते हैं। लेकिन पाठों और चित्रों के, उनके संयोजन के बारे में अंतिम निर्णय रुचिर खुद ही लेते हैं। भारतीय इलेस्ट्रेटर के साथ संपादन और डिज़ाइन संशोधनों के लिए ई-मेल के जरिये अनगिनत दौर चलते हैं।

रुचिर के पिता फेनिल शाह कहते हैं, ''हम दिशा और महत्वपूर्ण निर्णयों के मामले में उसकी सहायता करते हैं..। उसके दादा ने भी स्थानीय कलाकारों से काम करवा कर लागत कम रखने में काफी सहायता की। उन्होंने वेबसाइट बनाने के लिए भी काफी सुझाव

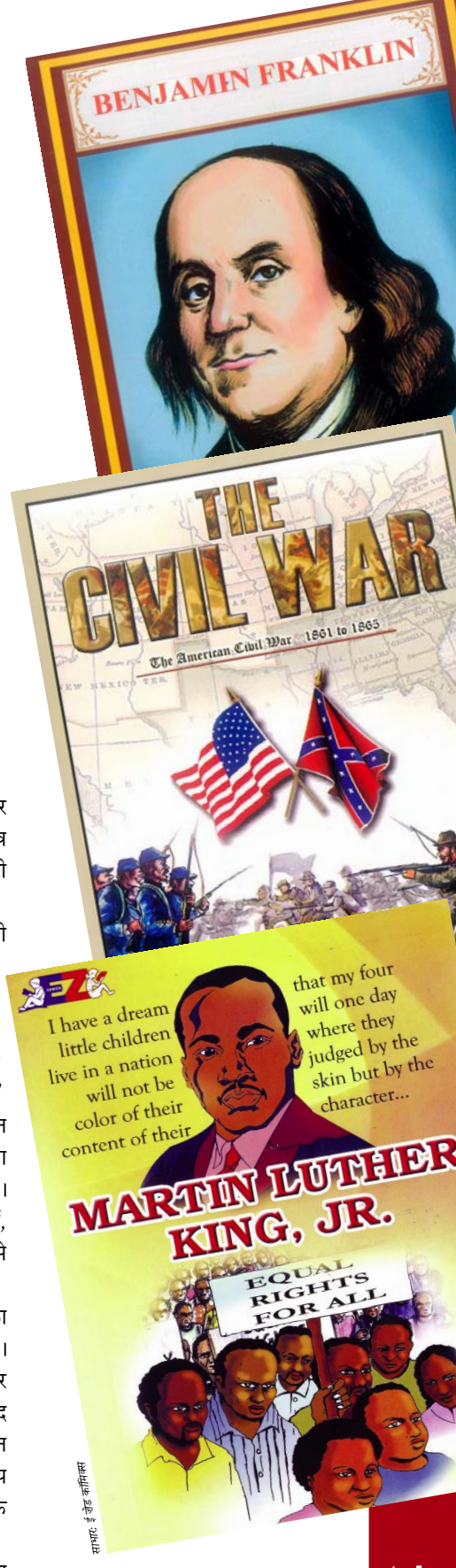

साभार: ई जेड कॉमिक्स

रुचिर शाह द्वारा प्रकाशित कॉमिक पुस्तकों के आवरण।

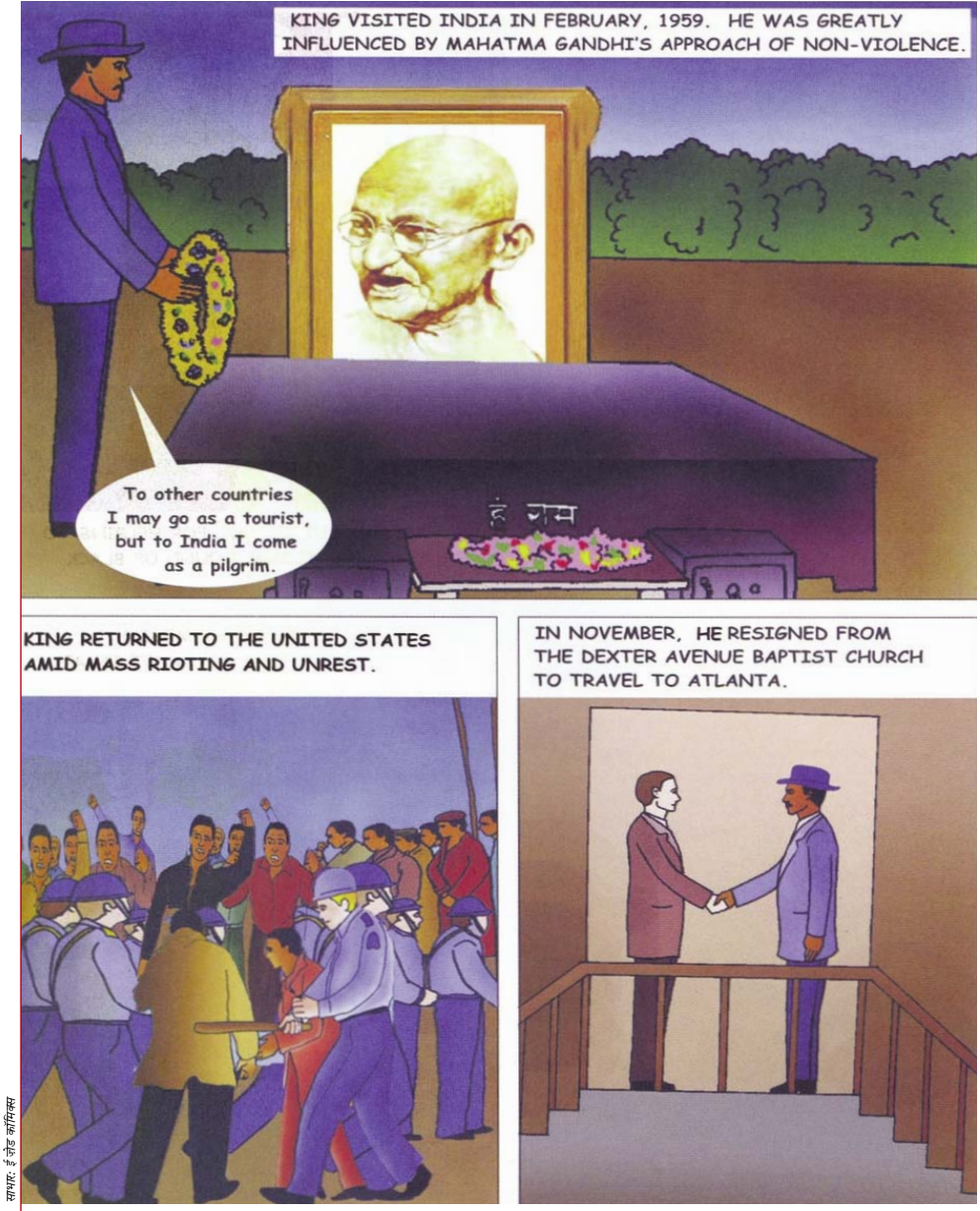

साभार: ई जेड कॉमिक्स

मार्टिन लूथर किंग, जू. पर तैयार कॉमिक पुस्तक के पैनल।

दिए।'' फेनिल शाह रोड आइलैंड में इलेक्ट्रिकल इंजीनियर हैं।

रुचिर के कॉमिक्स की एक प्रति की कीमत है 6.95 डॉलर। उन्होंने पाया कि उन्हें बेचना प्रक्रिया का सबसे कठिन हिस्सा है, ''बिक्री की प्रक्रिया के दौरान मुझे कुछ नकारात्मक प्रतिक्रियाएं भी मिलीं लेकिन इसमें मजा बहुत आया। यह जानना बड़ा उत्साहवर्धक था कि मैंने इतनी मेहनत से जो तैयार किया, लोग उसे खरीदना चाहते हैं।''

कुछ शिक्षाशास्त्री मानते हैं कि कॉमिक्स को साहित्य की जगह नहीं लेनी चाहिए लेकिन पढ़ने में अधिक रुचि न ले पाने वालों के लिए कॉमिक्स एक अच्छी शुरुआत है।

वर्ष 2007 में मैरीलैंड राज्य के शिक्षा विभाग ने कॉमिक्स इन क्लासरूम नाम की पहल की जिसके अंतर्गत तीसरे और चौथे ग्रेडों के बच्चों को चित्रमय उपन्यास और कॉमिक्स कक्षा में पढ़ाए जाने लगे।

मैरीलैंड राज्य की सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ स्कूल्स नैन्सी एस. ग्रास्मिक कहती हैं, ''पढ़ना सभी बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण गतिविधि है और कॉमिक्स के माध्यम से अध्यापकों के लिए छात्रों को शब्दों के संसार में खींच पाना आसान हुआ है।''

सैन डिएगो, कैलिफ़ोर्निया के फार्ब मिडिल स्कूल में सामाजिक अध्ययन के अध्यापक इमान श्वीकर्ट ने रुचिर के कॉमिक्स अपनी कक्षा में इस्तेमाल किए। ''मुझे उनसे व्याख्यानों की योजना बनाने में मदद मिली। हमारा पहला काम कहानी को विजुएल रूप में प्रस्तुत कर पाना होता है, यह कॉमिक्स बच्चों को मार्टिन लूथर किंग जूनियर, बेंजामिन फ्रैंकलिन और अमेरिका के गृहयुद्ध के बारे में बताते हुए उन्हें कहानी को विजुएल रूप में प्रस्तुत करना भी सिखा देते हैं।''

कॉमिक्स में प्रस्तुत सामग्री और तथ्यों में कहीं भी चूक न रहे, इसलिए रुचिर ने कैलिफोर्निया की स्टैनफ़र्ड यूनिवर्सिटी स्थित मार्टिन लूथर किंग जूनियर रिसर्च एंड एजुकेशन इंस्टिट्यूट के संस्थापक निदेशक क्लेबॉर्न कार्सन सहित कई विशेषज्ञों से उनका संशोधन करवाया।

सितंबर में स्टैनफ़र्ड यूनिवर्सिटी के एक अध्ययन समूह को नई दिल्ली, चेन्नई और मदुरै के गांधी दर्शन के विद्वानों और शांति कार्यकर्ताओं से मिलवाने लाए क्लेबॉर्न कार्सन ने कहा, ''मैंने रुचिर के साथ तब काम किया जब वह किंग पर आधारित कॉमिक बुक तैयार कर रहे थे। किंग के जीवन और उनसे प्रेरित आंदोलनों के बारे में बच्चों को शिक्षित करने के उनके प्रयास का मैं समर्थन करता हूं।''

रुचिर यू.एस. प्रेसिडेंशियल स्कॉलर को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं, ''यह बहुत बड़ा सम्मान है। हर किसी को नहीं मिल पाता।'' सच है, इस बार यह सम्मान कुल 139 छात्रों को मिला। सम्मान समारोह के लिए रुचिर एक सप्ताह वाशिंगटन, डी.सी. में रहे और राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश से मिले। बाद में उन्हें एक अध्ययन दौरे पर 12 छात्रों के साथ चीन भी भेजा गया।

रुचिर का इरादा भारतीय बाज़ार में अपने कॉमिक्स लाने का नहीं है लेकिन वह फिलहाल महात्मा गांधी पर एक कॉमिक बुक तैयार कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि अमेरिकी बच्चे इसे काफी पसन्द करेंगे। ''अक्सर होता यह है कि बच्चे इतिहास में छिपी विरासत को पकड़ नहीं पाते। महान ऐतिहासिक चरित्रों से काफी कुछ सीखने को मिलता है। बच्चे काल्पनिक नायकों को पसन्द करते हैं तो वह अतीत के महानायकों को भी ज़रूर पसन्द करेंगे।''

रुचिर शाह चीन की दीवार के पास दिखाई दे रहे हैं। वह प्रेसिडेंशियल स्कॉलर अवार्ड प्राप्त करने के बाद दो हफ़्ते की अध्ययन यात्रा पर चीन गए थे।

साभार: रुचिर शाह

ज़्यादा जानकारी के लिए:

ई जेड कॉमिक्स
http://www.ezcomics.com/

अमर चित्रकथा
http://www.ack-media.com/

मेरीलैंड कॉमिक्स बुक
http://www.marylandpublicschools.org/MSDE/programs/recognition-partnerships/md-comic-book.htm